National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 79-81
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

प्रीति सोनी
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग),
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व-विद्यालय, छतरपुर (म.प्र.), भारत

शोध निर्देशक
डॉ. सुधीर साहू
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग),
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व-विद्यालय, छतरपुर (म.प्र.), भारत

Correspondence:
प्रीति सोनी
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग),
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व-विद्यालय, छतरपुर (म.प्र.), भारत

"यूरोपीय लोककथाओं के संदर्भ में देवेंद्र कुमार के साहित्य में निहित बाल शिक्षा"

प्रीति सोनी , डॉ. सुधीर साहू

शोध सार- विकास युग प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार देवेंद्र कुमार के लोकथाओं में पक्षियों, पेड़, दैनिक आवश्यक, नैतिकता, सामाजिक सद्भाव, संगठन और परोपकार की शिक्षा उनकी कहानियों में निहित है। निर्जीव वस्तुओं को जीवंत कर मानवीय मूल्य को समझाना और मानवीय शैली का प्रयोग करना देवेंद्र कुमार की बाल लोककथा की प्रमुख विशेषता है।

बीज शब्द- बालक, लोककथा, संगठन, संगति, परोपकार, प्रकृति-पेड़, पक्षी।

हिंदी में बाल साहित्य अति प्राचीन विद्या हैं किंतु इसकी व्यवस्थित शुरुआत पंचतंत्र की कहानी से मानी जाती हैं। "बाल साहित्य के सोपान" में डॉ. बानो सरताज काज़ी बाल साहित्य को परिभाषित करते हुए लिखती हैं कि "वह साहित्य, जो बालकों में कुतूहल, विचार, तथा सर्जनशीलता को प्रोत्साहित करके जीवन को समझने में सहायक होता है, बालकों में प्रेम, त्याग, मानवता, निःस्वार्थता, राष्ट्रीयता आदि भाव विकसित करता है, कठिनाइयों, विपदाओं से जूझना सिखाता है वह बाल साहित्य है। विद्यालयीन विषयों की नीरसता के विपरीत जो लेखन रोचक ढंग से ज्ञान उपलब्ध कराता है, अतिरिक्त वाचन के लिए प्रेरित करता है, बालक का मनोरंजन करता है, वह बाल साहित्य है।"[1]

बालकों को शिक्षा ओर नैतिकता सिखाने के लिए उनके व्यवहारों, मनोभावों, का सूक्ष्म विश्लेषण कर अभिव्यक्त करना बाल साहित्य के अंतर्गत आता है। वह साहित्य जो बच्चों के मनोभावों को ध्यान में रखकर उन्हें ज्ञान, विचार नैतिकता, सदाचार एवं मनोरंजन के उद्देश्य से लिखा गया हो बाल साहित्य कहा जाता हैं।

प्राचीन समय से ही लोकथाओं का प्रचलन रहा है बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए दादी नानी माएं अपने बालकों बालिकाओं को लोकताओं के माध्यम से समाज के उन पहलुओं से अवगत कराती रही है जिनके द्वारा वे समाज का हित कर सके।

हिंदी बाल साहित्य के विकास युग के सिद्धहस्त कहानीकार देवेंद्र कुमार जो बालकहानी, बाल उपन्यासकार एवं नंदन पत्रिका के सह संपादक, उपन्यास, कहानी एवं अनुवाद के साथ ही मुख्य रूप से बाल साहित्य में बालगीत लिखे।

देवेंद्र कुमार ने 'एशिया की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएँ', 'यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएँ' तथा 'कॉमनवेल्थ देशों की अद्भुत लोककथाएँ' आदि इन्होंने अत्यंत सरल भाषा में बच्चों को नैतिक और सदाचार की शिक्षा साथ ही वस्तुओं का महत्व एवं मूल्य समझाने के लिए विभिन्न देशों की लोककथाओं को सम्मिलित किया है, जिसके माध्यम से बच्चे आसानी से अपने कर्तव्यों को समझ सके।

देवेंद्र कुमार ने लोकथाओं के माध्यम से सजीव निर्जीव वस्तुओं को ऐसे जीवंत वर्णन प्रस्तुत किया है जिसके द्वारा बालक अपने आसपास मौजूद वस्तुओं मूल्य को आसानी से समझा सके साथ ही उदार एवं परोपकार की भावना उत्पन्न हो सके। देवेंद्र कुमार का बाल कहानी संग्रह "एशिया और यूरोप की सर्वश्रेष्ठ

लोककथाएं" संकलन में 19 देशों की लोकथाओं का संकलन किया है। प्रकाश मनु कहते हैं कि "संसार के भिन्न-भिन्न अंचलों की लोककथाओं को सहेजने की भी कोशिश हुई है। देवेंद्रकुमार की 'एशिया की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएँ', 'यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएँ' तथा 'कॉमनवेल्थ देशों की अद्भुत लोककथाएँ' इस लिहाज से सुंदर पुस्तकें हैं।"[2]

वस्तुओं के मूल्य ओर महत्व की शिक्षा

छातों की हड़ताल, बांग्लादेश की एक प्रसिद्ध लोककथा माध्यम से लेखक बालकों को अपनी हर छोटी बड़ी बस्तु की अहमियत करना सिखाते है लेखक निर्जीव वस्तुओं मानवीय शैली इस प्रकार सजीव चित्रण करता है। छाते की मनोदशा में संवेदनाओं का संचरण इस प्रकार किया गया है जिसके द्वारा बालक अपनी वस्तुओं के मूल्य ओर महत्व को समझ सके।

"बरसात में लोग छातों को लेकर निकलते और छाते स्वयं बारिश में भीगकर लोगों को भीगने से बचाते। पर घर लौटने के बाद प्रायः ही लोग छातों को लापरवाही से कोने में पटक देते। लोगों को छातों की याद अगली बारिश के समय ही आती थी। यह बात तो गलत थी। छातों ने मनुष्यों की इस लापरवाही के बारे में आपस में बात की और फैसला हुआ-हड़ताल।"[3]

कहानी का उद्देश्य यह है कि हम लापरवाही में जिन चीजों को हिफाजत से नहीं रखते ओर अगर वे अपना कार्य करना बन्द कर दे तो हम कितनी विपत्ति में पड़ सकते। अतः लेखक छाते के माध्यम से मनुष्य को यह शिक्षा देना चाहता है कि अपनी हर वस्तु का मूल्य समझना ओर उसे महत्व देना ओर हिफाजत करना लोकथा का मुख्य उद्देश्य हैं।

प्रकृति के माध्यम से शिक्षा

लेबनान की एक लोककथा "छींकने वाला पेड़" के माध्यम से कहानीकार ने एक जटिल मुद्दे को उठाया है पर्यावरणीय प्रदूषण और मनुष्य के स्वार्थ का परिचय यह कहानी देती हैं जिसमें एक पेड़ के पास कुछ समय पहले नाला बना दिया था और उसी की वजह से पेड़ पर पड़ने वाले गंदे नाले के पानी की वजह से पेड़ में अजीब सी आवाज आती पक्षी पेड़ को छोड़कर चले गए थे लोग उस पेड़ भूतहा खाने लगे ।एक जमींदार था जो नाले के गंदे पानी को रोकने के लिए थोड़ी सी जमीन नहीं देता और जब बारिश आती हैं तो पानी बस्ती के अंदर तक आने लगता है और जब जमींदार के घर की एक मंजिल पानी में डूब जाती है और इस विपत्ति में जमींदार अपनी जमीन पर नया नाले बनाने देता हैं। पेड़ अब खुश था उससे भीगने से जो छींके आती थी वो भी बंद हो गई थी सारे पक्षी पुनः लौट आए थे पेड़ पर ओर नए घोंसले बना लिए "लोगों ने पेड़ को भुतहा पेड़ कहना छोड़ दिया। पेड़ खुश था, लोग हैरान थे कि पेड़ से सुनाई देने वाली छींकने की आवाज कैसे बन्द हो गई। इसका रहस्य कोई नही जान पाया। लेकिन पेड़ को पता था कि उसके दुखी मन की प्रार्थना उसके देवता ने अवश्य सुन ली थी। तभी तो हो सका था यह चमत्कार।"[4]

लोकथाओं में पशु पक्षी प्रकृति से जुड़े कथाएं प्राचीन समय से प्रचिलत रही है जिसमें देवेंद्र कुमार "बुलबुल" की कथा जिसमें एक पक्षी के द्वारा मानवीय मूल्यों को समझाने का प्रयास किया गया है। कथाकार ने इस कथा के माध्यम से यह बताया है विनम्रता से बड़ी से बड़ी मुश्किल को भी सुलझाया जा सकता हैं जैसे लड़की ने बुलबुल के लिए कहा कि पक्षी राजा की प्रजा नहीं जो राजा का आदेश माने बल्कि उससे प्रार्थना ही की जा सकती ।

एक अन्य प्रसंग कहानी में आता है जब राजा बुलबुल रोज महल आने लगती हैं राजा को गीत सुनती हैं लेकिन राजा को एक उपहार मिलता है सोने की बुलबुल और उसके चाबी भरते ही वह गीत सुनाने लगती हैं राजा उसी बनावटी बुलबुल में मग्न हो जाता है बुलबुल अपनी आवश्यकता यहां ना जानकर दूर चली जाती हैं एक दिन चाबी से चलने वाली बुलबुल का खिलौना खराब हो जाता है और इससे राजा क्रोधित होता हैं और असली बुलबुल को बुलाने की बात करता ।राजा। बहुत बीमार हो जाता है जिससे ये खबर राज्य में पहुंच जाती हैं कि अब राजा जीवित नहीं बचेंगे । तभी हल्की रोशनी में मीठा स्वर सुनाई देता है।बुलबुल राजा से कहती हैं "बुलबुल ने कहा, "आपको मेरी जरूरत नहीं थी इसलिए मैं चली गई थी। अब आपकी बीमरी की खबर सुनकर आई हूँ।" ... "महाराज, इसमें खिलौना बुलबुल का कोई दोष नहीं। वह देखने में सुन्दर है। कारीगर ने उसे मेहनत से बनाया है।.. मुझे तो अपना झील के किनारे वाला पेड़ ही पसन्द है। नीले आकाश के नीचे खुली हवा में उड़ना अच्छा लगता है मुझे।"[5] कहानी का एक उद्देश्य यह भी है कि बनावटी सुंदर और आर्कषक चीजों के कारण वास्तविक सौंदर्य की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।

सामाजिक लोक कल्याण की शिक्षा

देवेंद्र कुमार, बाल कहानी संग्रह "एशिया और यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोकथाए" में संकलित कहानी में "सदा प्रसन्न राजा" आयलैंड की लोककथा है जिसमें जब राजा जीवित रहा तब तक अपने सुखों में मग्न रहकर दूसरों के दुख को पहचान नहीं पाया और जब मृत्यु हुई तो राजा ने जाना कि दुनिया में, उसकी ही प्रजा में कितनी समस्याएं हैं दुख की क्या अनुभूति होती है गरीब, मजबूर की समस्याएं क्या होती हैं, चिड़िया के द्वारा राजा उनकी मदद करता है।

'चार चतुर' ऐसी भाइयों की कहानी है जो अपने पिता के कहने पर अलग अलग कार्य सीखकर लौटते हैं और जब उनकी परीक्षा पिता द्वारा ली जाती है तब वह उनमें सफल होते है। राजकुमारी को ड्रैगन उठाकर ले जाता है तब चारों भाई राजकुमारी की खोज में लग जाते

है खगोलशास्त्र में कुशल भाई ने यंत्र से पता लगाया , चोरी में निपुण भाई ने राजकुमारी को पहाड़ पर चढ़कर चुपचाप उठा लाया। तब चारों नाव में लौटने लगे तो ड्रेगन उड़ता हुआ आया तब निशानेबाजी की कला में निपुण भाई ने उस पर निशाना लगाया और नाव टूटने पर सिलाई में निपुण भाई ने नाव को सुई से सी दिया अतः सकुशल राजकुमारी को सकुशल राजा के पास पहुंचा दिया ।तब राजा ने प्रसन्न होकर राजकुमारी के विवाह का प्रस्ताव दिया तब "चारों भाइयों ने कुछ सोचा, फिर बोले, "हम राजकुमारी को पाने के लिए आपस में लड़ना नहीं चाहते।"...राजा ने चारों भाइयों को खूब इनाम दिया। चारों ने लौटकर पिता को पूरी बात बता दी। पिता ने हँसकर पूछा, "तुम चारों ने अपना-अपना काम किया, फिर यह पाँचवीं चतुराई तुमने किससे सीखी?" "आपसे और किससे।" चारों ने कहा और सभी पिता से लिपट गए।"[6]

कहानी के माध्यम से लेखक संगठन, संगति और अपनी कार्य निपुणता से सकारात्मक दृष्टि से लोकहित के लिए अपनी कला निपुणता का प्रयोग किया जा सकता हैं।

निष्कर्ष

हिंदी के वरिष्ठ बाल साहित्यकार देवेंद्र कुमार ने बाल लोकथाओं के माध्यम से सामाजिक शिक्षा, सद्भाव एवं संगठन एवं संगति, परोपकार की भावना एवं मानवीय शैली के माध्यम से प्रकृति पेड़, पक्षियों के माध्यम से संवेदनाओं व सामाजिक समस्याओं को अति सूक्ष्मता वर्णन किया गया है। कथाकार लोकथाओं के माध्यम से ना सिर्फ बच्चों को पर्यावरण से जोड़ने बल्कि उनके माध्यम से बालकों को नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा भी देने का प्रयास किया है, साथ ही उन्हें वस्तुओं का महत्त्व एवं उन्हें सहेजने पर भी जोर दिया है।

<u>सन्दर्भ सूची</u>-

1.काज़ी बानो सरताज, बाल साहित्य के सोपान, 2021, पृष्ठ संख्या-15

2.मनु प्रकाश, बालसाहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, 2020, पृष्ठ संख्या- 241

3.कुमार देवेंद्र, "एशिया और यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएं", प्रकाशक ट्रांसवर्ल्ड पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण (2008), पृष्ठ संख्या- 5

4.कुमार देवेंद्र, "एशिया और यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएं", प्रकाशक ट्रांसवर्ल्ड पब्लिशर्स, 2008, पृष्ठ संख्या- 13

5.कुमार देवेंद्र, "एशिया और यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएं", प्रकाशक ट्रांसवर्ल्ड पब्लिशर्स, 2008, पृष्ठ संख्या- 91

6.कुमार देवेंद्र, "एशिया और यूरोप की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएं", प्रकाशक ट्रांसवर्ल्ड पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण (2008), पृष्ठ संख्या- 104